Lesson-8
Madhubani Art

Introduiton: The teacher will enter into the classroom in a pleasant mood. Drawing attention of the students, he will ask the students, 'What is Bihar famous for? students' answers may be ï

(a) Banana of Hajipur, (b) Lichi of Muzaffarpur, (c) Khaja of Silaw, (d) Maldah mango of Darbhanga, (e) Jardala mango of Bhagalpur ---- etc.

Now, teacher will tell them that similarly painting of Madhubani is famous not only in Bihar and India, it is famous all over the world. We are going to study about ñMadhubani Artò today.

Central Theme:

1. To study about famous things of a specific locality.
2. Causes of its fame.
3. Depiction of natural things, heritage and culture through painting and art.

Reading: The teacher will read aloud one paragraph of the lesson with proper pronunciation and punctuation marks two or three times. Now, the students will read aloud the same paragraph with proper pronunciation and punctuation marks one by one.

Vocabulary:

Words	Pronunciation	Meaning
Famous	फेइमस (फेमस)	प्रसिद्ध
Painting	पेंटिंग	चित्रकारी
Generally	जेनरली	अक्सर
Wall	वॉल	दिवाल / दीवार
Pot	पॉट	बर्तन
Wood	वुड	लकड़ी
Till	टिल्	तक
Ago	अगउ(एगो)	पहले
Decorated	डेकॉरेअटिड	सजाया
Used for	युज्ड फॉ(र)	उपयोग किया जाता था
In the last	इन द लास्ट	विगत
Artist	आ(र)टिस्ट	कलाकार
Started	स्टा(र) टिड	प्रारंभ किया
Bases	बेइसिज	आधार
Material	मेटियरियल	सामग्री
Natural	नेचुरल	प्राकृतिक
Fabric	फेबरिक	बनावटी / कृत्रिम
Theme	थीम	विषय–वस्तु
Scene	सीन	दृश्य
Religion	रिलीजन	धर्म

https://www.evidyarthi.in/

Depend	डिपेण्ड	निर्भर करना
Great	ग्रेइट	महान
Participated	पार्टिसिपेटेड	भाग लिया
Both	बोथ	दोनों
National	नेशनल	राष्ट्रीय
Internatioal	इन्टर(र)नेशनल	अन्तर्राष्ट्रीय
Many	मेनी	बहुत
Region	रिजन	क्षेत्रीय
Considered	कंसिड(र)ड	माना जाता है।
Forum	फोरम	जनसभा
Exceptional	इकसेप्शनल	अपवाद / ख्यातिप्राप्त
As well	ऐजवेल	साथ–ही–साथ
Centre	सेन्ट(र)	केन्द्र
Conduct	कंडक्ट	आयोजन करना
Training	ट्रेनिंग	प्रशिक्षण
Pupil	प्यूपल	छात्र
Keen intrest	कीन इन्टरेस्ट	गहरी रूचि
Traditional	ट्रेडिश्नल	परम्परागत
Art	आर्ट	कला
How ever	हाउएभर	फिर भी
Learn	लर्न	सीखना
People	पीपुल	लोग

<u>Activity</u> The whole class will be divided into small groups. In all groups there will be five or six students. In each group the techer will provide a photocopy of Madhubani Painting given in óSikshak-Sathiô. The students will draw the picture and colour it. The teacher will guide the students in coloring and dwaring borders in similar fashion (way) as in Madhubani Art.

evidyarthi
https://www.evidyarthi.in/

Evalualion:

While teaching students must be assessed. Questions from the lesson should be raised.

Teacher should conduct a drawing competition in the class. All the students should be encouraged.

Recap: The teacher will repeat the whole activities of the classroom transaction .

Exercise: Exercises given in the lesson must be solved by the students. The teacher will assist them wherever required. The teacher has full liberty to change the order of the questions in the lesson.

fgUnh vuokn%

बिहार की बहुत सारी प्रसिद्ध चीजों में एक मधुबनी चित्रकारी है। ये चित्रकारियाँ अक्सर दीवारों, कागजों, कपड़ों, सजावटी बर्तनों तथा लकड़ियों में दिखती हैं। अब से 50–60 वर्ष पहले, इसका उपयोग गाँवो में धर के दीवारों को सजाने के लिए किया जाता था। विगत पचास वर्षों से, ग्रामीण कलाकारों ने कागज और कपड़ों पर चित्रकारी प्रारंभ किया है। अब वे साड़ियों, दुपट्टों, रूमालों, मेज पोशों, लकड़ी, बर्त्तनों और अन्य आधारों पर चित्र बनाते हैं।

कलाकारों द्वारा इन चित्रकारियों में प्रयुक्त कच्चे मालों में रंग, फूलों और अन्य प्राकृतिक वस्तुओं से बने प्राकृतिक रंग होते हैं। लेकिन कपड़ों और दिवारों पर वे कृत्रिम रंगों का भी उपयोग करते हैं।

इन चित्रकारियों के विषयवस्तु गाँवों के प्राकृतिक दृश्य, पेड़–पौधे एवं जन्तु अथवा धर्म से संबंधित होते हैं। मधुबनी के बहुत से लोगों का जीवनयापन इस कला पर निर्भर है। बहुत सारे महान कलाकार हैं, जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही कार्यक्रमों में भाग ले चुके है। उनमें से बहुत से कलाकार महिलाएँ हैं। उन कालाकारों में से कुछ अपने क्षेत्र के जाने–माने नाम के साथ ही राष्ट्रीय स्तर की जनसभाओं में भी ख्याति प्राप्त हैं।

अब तो बहुत सारे केन्द्र मधुबनी चित्रकारी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहे हैं। ग्रामीण कलाकारों के अलावा भी बहुत सारे लोग इस परम्परागत कला में गहरी रूचि ले रहे हैं। गाँवों में पाँच वर्ष के बच्चे अपनी माँ के साथ यह कला सीख रहे हैं।

https://www.evidyarthi.in/